

# डीडब्ल्यूआरबी 182

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र की सिंचित दशा में समय से बीजाई के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त माल्ट जौ की सर्वोत्तम किस्म



## संकलन एवं सम्पादन

रमेश पाल सिंह वर्मा, ओमवीर सिंह, लोकेन्द्र कुमार, दिनेश कुमार, जोगेन्द्र सिंह चुनी लाल, रेखा मलिक, अजीत सिंह खरब, अनिल खिप्पल, मंगल सिंह, अनुज कुमार संतोष कुमार बिश्नोई, विष्णु कुमार, राजेन्द्र कुमार एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह



भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान  
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research  
करनाल-132001, भारत | Karnal-132001, INDIA



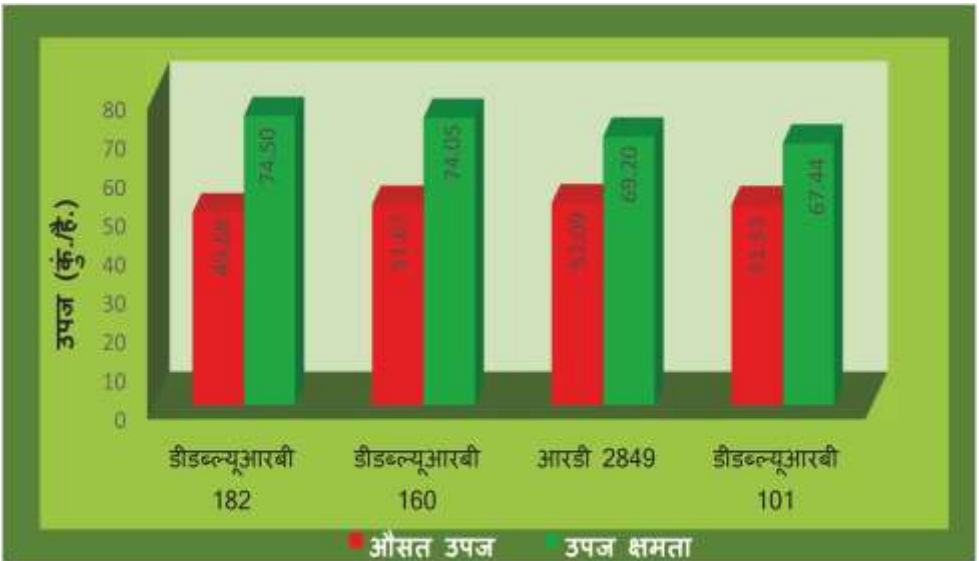
## अनुमोदन

जौ की किस्म डीडब्ल्यूआरबी 182 को भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा द्वारा विकसित किया गया है। उच्च उत्पादन, उच्च माल्ट डायस्टेटिक पावर, कम बीटा ग्लूकन मात्रा एवं उच्च रोग प्रतिरोधी गुणों से युक्त द्वि पंक्ति जौ की किस्म डीडब्ल्यूआरबी 182 को भारत सरकार की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन के लिए केन्द्रीय उप-समिति द्वारा जारी की गई अधिसूचना दिनांक 9 नवम्बर, 2020 के माध्यम से व्यावसायिक खेती के लिए अधिसूचित किया गया है।

## जलवायु एवं उपयुक्त क्षेत्र

माल्ट जौ किस्मों की खेती के लिए उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र को सर्वोत्तम माना गया है, जिसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा एवं उदयपुर संभाग को छोड़कर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के तराई क्षेत्र, जम्मू कश्मीर के जम्मू एवं कठुआ जिले व हिमाचल प्रदेश का ऊना जिला एवं पोंटा घाटी सम्मिलित हैं। माल्ट किस्मों के उत्पादन के लिए उपयुक्त जलवायु के साथ-साथ सिंचित उर्वरा भूमि की आवश्यकता होती है।

## अन्य किस्मों की तुलना में डीडब्ल्यूआरबी 182 की औसत उपज एवं उपज क्षमता की स्थिति



## डीडब्ल्यूआरबी 182 किस्म की प्रमुख विशेषताएँ

- द्विपंक्ति जौ की यह किस्म सिंचित एवं समय से बीजाई के लिए उपयुक्त है।
- इसकी बालियाँ हरी, सीधी एवं सघन हैं तथा पौधों की औसत लम्बाई 90 सेंटीमीटर है।
- अधिक आनुवंशिक उपज क्षमता एवं उच्च माल्टिंग गुणवत्ता के आधार पर अन्य जाँचक किस्मों से यह किस्म श्रेष्ठ है।

- इस किस्म में पीला रतुआ रोग के विरुद्ध उच्च स्तर की प्रतिरोधकता है, साथ ही अन्य रोगों एवं कीटों के लिए भी प्रतिरोधकता से परिपूर्ण है। इसलिए कृषि रसायनों पर होने वाले अनावश्यक खर्च से भी बचा जा सकता है।
- यह किस्म लगभग 133 दिन में पककर तैयार हो जाती है।
- इस किस्म के दाने मोटे एवं हल्के पीले रंग के होते हैं तथा 1000 दानों का वजन लगभग 44 ग्राम है।



### डीडब्ल्यूआरबी 182 के गुणवत्ता मानकों की जाँचक किस्मों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण

गुणवत्ता मानक	प्रस्तावित किस्म डीडब्ल्यूआरबी 182	जाँचक किस्मों		
		डीडब्ल्यूआरबी 101	आरडी 2849	डीडब्ल्यूआरबी 160
हेक्टोलीटर वजन (कि.ग्रा./हेक्टोलीटर)	62	65	66	64
मोटे दाने (प्रतिशत)	86	91	91	96
पतले दाने (प्रतिशत)	2.7	1.3	1.4	0.8
1000 दानों का वजन (ग्राम)	44	44	48	63
छिलका (प्रतिशत)	12.0	9.8	11.0	11.4
प्रोटीन (प्रतिशत)	11.3	10.8	10.6	10.5
अंकुरण ऊर्जा (प्रतिशत, 72 घंटे में)	97.5	98	97.5	96
बीटा-ग्लूकन (प्रतिशत)	4.7	5.7	5.4	7.3
माल्ट फ्राईबिलिटी (प्रतिशत)	66	65	63	57
डाईस्टैटिक पावर (लिटनर)	86	74	75	83
माल्ट एक्सट्रैक्ट/सार (प्रतिशत)	79.4	79.9	79.1	79.3
मुक्त एमिनो नत्रजन (पीपीएम)	178	202	193	161
वर्ट बीटा ग्लूकन (पीपीएम)	506	755	706	939

### महत्वपूर्ण सस्य क्रियाएं

फसल की अच्छी गुणवत्ता एवं अधिकतम उत्पादन में सस्य क्रियाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। डीडब्ल्यूआरबी 182 के अधिकतम उत्पादन एवं अनाज की उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित सस्य क्रियाओं की सिफारिश की गई है।

### भूमि एवं बीजाई का समय

जौ की यह किस्म उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में सिंचित व समय से बीजाई (10–25 नवम्बर) के लिए उपयुक्त है। इसके लिए अच्छे जल निकास वाली समतल एवं हल्की दोमट मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है।

### बीज उपचार

बीज जनित रोगों के सफल प्रबंधन के लिए जौ के बीज को कवकनाशी कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत + थीरम 37.5 प्रतिशत डब्ल्यूएस की 3.0 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज अथवा टेबुकोनाजोल 2डीएस की 1.0 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। बीज को बायोएजेन्ट से भी उपचारित किया जा सकता है यदि जौ की जैविक खेती या प्राकृतिक खेती करनी हो तो यह एक आवश्यक प्रक्रिया है।

## बीज दर

डीडब्ल्यूआरबी 182 की समय से बीजाई के लिए 100 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से डालने की सिफारिश की गई है।

## पंक्ति से पंक्ति की दूरी एवं बीजाई की विधि

पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 5 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। जौ की बीजाई के लिए सीड ड्रिल को सबसे उपयुक्त माना गया है। जीरो टिलेज मशीन का प्रयोग करके फसल अवशेष के अंतर्गत भी जौ की बीजाई की जा सकती है।

## उर्वरक प्रबंधन

माल्ट के उद्देश्य से बीजाई की गई फसल में नत्रजन की मात्रा 90 किलोग्राम, फास्फोरस 40 किलोग्राम एवं पोटाश 20 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से डालना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बीजाई के समय डालें तथा शेष नत्रजन की मात्रा पहली सिंचाई के बाद डालें।

## खपतवार नियंत्रण

जौ की फसल में संकरी पत्ती वाले (मंडूसी/कनकी/गुल्ली डंडा, जंगली जई, लोमड़ घास) खरपतवारों के नियंत्रण के लिए आइसोप्रोटुरॉन (75 डब्ल्यूपी) 1250 ग्राम या पिनोक्साडेन (5 ईसी) 875 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। सभी खरपतवारनाशी/शाकनाशी का छिड़काव बीजाई के 30–35 दिन बाद 400–500 लीटर पानी में घोल बनाकर फ्लैट फैन नोजल से करें। बहुशाकनाशी प्रतिरोधी कनकी के नियंत्रण के लिए पेन्डीमैथालिन (30 ईसी) 3333–4950 ग्राम को 400–500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से बीजाई के तुरन्त बाद (2–3 दिन) प्रयोग करें।

## सिंचाई

अच्छी फसल लेने के लिए सामान्यतः 2–3 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई कल्ले निकलते समय (30–35 दिन), दूसरी सिंचाई बीजाई के 60–65 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई दानों में दूध बनने के समय 80–85 दिन के बाद करना आवश्यक है।

## कटाई एवं मढ़ाई

जौ की फसल मार्च के अन्त से अप्रैल के पहले पखवाड़े तक पककर तैयार हो जाती है। इसकी कटाई पूर्ण पकने की अवस्था में हांसिए/दरांती से मजदूरों द्वारा कटाई करा लेनी चाहिए। आजकल कटाई एवं बंधाई के लिए हार्वेस्टर का भी प्रचलन है। कटी हुई फसल को 2–3 दिन बाद पावर थ्रेशर से मढ़ाई करें। कम्बाईन हार्वेस्टर से कटाई, मढ़ाई एवं ओसाई का कार्य एक साथ संपादित किया जा सकता है।

## उपज

इस किस्म की औसत उपज 49.68 कुंतल तथा उपज क्षमता 74.50 कुंतल प्रति हैक्टर है।

प्रथम प्रकाशन : अक्टूबर 2022

<https://iiwbr.icar.gov.in/>

प्रतियाँ : 2000

प्रकाशक : डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल